जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति का सिद्धान्त

डॉ० विरेन्द्र नारायण पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
गंगा सिंह कॉलेज, छपरा

डॉ० शर्मिला राय
व्याख्याता
राजेन्द्र अशर्फी डिग्री कॉलेज
कटहरी बाग, छपरा

जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति की अवधारणा डॉ० लोहिया की सप्तक्रान्ति की अवधारणा की तरह ही है । जयप्रकाश नारायण ने समाज परिवर्तन के लिए सम्पूर्ण क्रान्ति की घोषणा की । उनकी सम्पूर्ण क्रान्ति का विचार गाँधी के समाज परिवर्तन के विचार का विस्तार है । उनकी यह धारणा थी कि क्रान्ति कोई करता नहीं है, बल्कि वह अपने आप पैदा होती है । उनके अनुसार सम्पूर्ण क्रान्ति शान्तिमय तरीके से लोकतान्त्रिक ढाँचे को क्षतिग्रस्त किये बिना और जनता की लोकतान्त्रिक जीवन–पद्धति को प्रभावित किये बिना, करनी है । [1]

इस तरह जयप्रकाश नारायण के अनुसार सम्पूर्ण क्रान्ति में हिंसा और असंवैधानिक तरीके का कोई स्थान नहीं है । सामाजिक परिवर्तन के प्रति जयप्रकाश नारायण का दृष्टिकोण मूल्य–निष्ठा और वैज्ञानिक था । उनके अनुसार अगर लक्ष्य और मूल्य को हमेशा स्पष्ट रखा जाये, तो अनुभव के आधार पर वहाँ पहुँचने के मार्ग बदले जा सकते है । उनका यह मानना था कि प्रत्येक दिशा में क्रान्ति की स्थिति पैदा करने के लिए नेता और संगठन दोनों की आवश्यकता होगी । नेता और संगठन के न होने पर क्रान्ति अन्त में अस्त व्यस्तता की स्थिति में समाप्त या तानाशाही ही लागू हो जायेगी । [2]

जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति के संदर्भ में कहा कि सात प्रकार की क्रान्तियाँ मिलकर संपूर्ण क्रान्ति होती है । वे है – सामाजिक क्रान्ति, आर्थिक क्रान्ति, राजनीतिक क्रान्ति, सांस्कृतिक क्रान्ति, वैचारिक क्रान्ति, शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति । सात की संख्या को घटाया या बढ़ाया जा सकता है । [3]

जयप्रकाश नारायण के अनुसार क्रान्ति का स्वरूप देखने वाले के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है । वे जिन सात क्रान्तियों की बात करते हैं, उसमें सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्रान्तियाँ ही प्रमुख है ।

बिहार आन्दोलन के समय जयप्रकाश नारायण ने सामाजिक कुरीतियो–छुआछूत, दहेज, जातिभेद आदि मिटाने के लिए, संघर्ष करने का आह्वान किया । भारतीय समाज में जड़वत जाति व्यवस्था को मिटाने के लिए उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह के लिए युवाओं को प्रेरित किया ।

राजनीतिक क्रान्ति के अन्तर्गत जयप्रकाश नारायण ने लोकतन्त्र को अत्यधिक महत्व दिया । तानाशाही का घोर विरोध करते थे । लोकतंत्र और मौलिक नागरिक स्वतंत्रता उनके जीवन का लक्ष्य था ।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार नागरिकों को सिर्फ एक वर्ष में एक बार वोट डालने का अधिकार तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए । उनका यह मानना है कि जनता को अपने प्रतिनिधित्व के लिए उम्मीदवार के चयन में परामर्श देने का अधिकार होना चाहिए साथ ही साथ चुनाव के बाद प्रतिनिधियों पर जनता का अंकुश रहना चाहिए । इस तरह उन्होंने प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार होना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त लोकतंत्र को वास्तविक बनाने की दृष्टि से जयप्रकाश नारायण चुनाव पद्धति में ऐसा मौलिक परिवर्तन लाना चाह रहे थे, जिससे चुनाव को निष्पक्ष, स्वतंत्र और कम खर्चीला बनाया जा सके ।

जयप्रकाश नारायण ने जनता की व्यापकतम भागीदारी वाले सामुदायिक, दलविहिन, लोकतंत्र की वकालत की थी । 1974 के बिहार 'आन्दोलन' के समय उन्होंने स्पष्ट किया था कि यह एक दूरगामी लक्ष्य है जिसे एक वर्ग विहिन और जाति विहिन समाज से ही प्राप्त किया जा सकता है ।

आर्थिक क्रान्ति के संदर्भ में जयप्रकाश नारायण ने यह कहा कि इसका अर्थ समाज के आर्थिक ढाँचे तथा आर्थिक संस्थाओं में तथा उनके नये क्रान्तिकारी रूपों से है । आर्थिक क्रान्ति का संबंध परिवर्तन एवं नई रचना, दोनों से है । [4]

जयप्रकाश नारायण का यह मानना है कि विश्व में प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है । यह निरन्तर बदल रही है और नई बन नही है, तो क्रान्ति तथा क्रान्तिकारी परिवर्तन का क्या आशय है ? उनका यह भी मानना है कि कभी–कभी इस परिवर्तन के विषय अथवा तत्व में भी बहुत गुणात्मक परिवर्तन हो जाते है, जैसे पानी को गर्म करने पर भाप बन जाता है । [5]

आर्थिक क्षेत्र में जयप्रकाश नारायण अनियंत्रित पूँजीवाद और राजकीय पूँजीवाद दोनों के विरोधी है । उनका विश्वास मिश्रित अर्थव्यवस्था और गाँधी की ट्रस्टीशिप के नये रूपों जेसे श्रमिको को ट्रस्टीशिप–इसके वे समर्थक है । वास्तविकता तो यह है कि जयप्रकाश नारायण के विचार आर्थिक प्रश्नों पर बहुत लचीले थे । उन्होंने गाँधीजी के ट्रस्टीशिप की भावना को समाज में फैलाने को आवश्यक माना है । जयप्रकाश नारायण ने ट्रस्टीशिप की भावना को स्पष्ट करते हुए कहा कि व्यापार–उपयोग के क्षेत्र में भी कई समस्यायें सामने है । आज पूँजीवाद समाजवाद साम्यवाद प्राइवेट सेक्टर और पब्लिक सेक्टर में उठने वाली समस्याओं का कोई हल नहीं निकल पाया है । इन समस्याओं के हल के प्रयास में कायदे–कानून बनते है, जहाँ अधिनायकवाद है, वहाँ डराने धमकाने के तरीके अपनाये जाते है, लेकिन बावजूद इसके जब तक लोगों के हृदय को स्पर्श नहीं किया जाता, समस्यों सुलझती नहीं ।

माओ ने बहुत मेहनत की । उसने चाहे पार्टी की हो, प्रशासन की हो या तकनीशियनों की, सभी क्षेत्र की नौकरशाही को तोड़ने की कोशिश की फिर भी वह सफल नहीं हो पाता है, जब तक लोगों के मन को छूता नहीं है । [6]

जयप्रकाश नारायण के अनुसार कानून भय, हिंसा के किसी भी माध्यम से की गई क्रान्ति के बाद सवाल हल नहीं हो पाया है । उनके अनुसार–जब तक किसी भी काम को करते हुए मानवीय मूल्यों की प्रेरणा सामने नहीं होगा कुछ फर्क नहीं पड़ेगा । हम केवल अपने लिए ही

काम नहीं कर रहे है इसमें हमारे आपस के लोग, समाज देश आदि भी हमसे जुड़े हुए हैं – 'ऐसी भावना तक हर आदमी को उठना पड़ेगा । वह किसी भी हैसियत से काम कर रहा हो, एक नागरिक, व्यापाकरी, शिक्षक, डॉक्टर या वकील हो, किसी उपयोग का मालिक, मैनेजर या मजदूर हो वह समाज के प्रति अपने क्या कर्तव्य है, उन्हें समझकर अपने कार्य को ईमानदारी के साथ पूरा करें । हर आदमी अपनी बुद्धि धन और श्रम का मालिक नहीं बल्कि ट्रस्टी है, यह भावना जागृह हो । गाँधीजी ने इसी को ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त कहा है । [7]

जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति को एक निरन्तर क्रान्ति कहा है । वे यह मानते है कि यह निरन्तर चलने वाली क्रान्ति है । उन्होंने कहा कि – निरन्तर क्राान्ति कभी शुरू हुई, कभी खत्म हुई, ऐसा नहीं होगा । घर–घर में क्रान्ति, व्यापक क्रान्ति और निरन्तर क्रान्ति यह सम्पूर्ण क्रान्ति की मेरी कल्पना है । यह एक अखण्डधारा है प्रवाह । मेरी कल्पना सतत क्रान्ति की है । सम्पूर्ण क्रान्ति सतत चलेगी निरन्तर चलेगी, हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को बदलती चलेगी । इस क्रान्ति में कोई विराम नहीं है, पूर्ण विराम तो हरगिज नहीं है । परिस्थिति के अनुसार उसके रूप बदलेंगे कार्यक्रम बदलेंगे प्रक्रियायें बदलेगी और वक्त आने पर नई शक्तियों का ऐसा उभार होगा जो परिवर्तन के रथ को धक्का मारकर आगे बढ़ा देगी । [8]

जयप्रकाश नारायण का यह मानना है कि संघर्ष और रचना की दोहरी प्रक्रिया सम्पूर्ण क्रान्ति को सफल करने के लिए आवश्यक है । इस तरह उनकी दृष्टि में रचनात्मक कार्यक्रम और संघर्ष के साथ–साथ चलना आवश्यक है । उन्होंने गाँधीजी के रचनात्मक–कार्यक्रम को सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए स्वीकार कर, सम्पूर्ण क्रान्ति की दिशा निर्धारित की ।

जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति की विधि के संदर्भ में यह स्पष्ट कहा है कि – सम्पूर्ण क्रान्ति शान्तिमय तरीके से, समाज के लोकतान्त्रिक ढाँचे को क्षतिग्रस्त किये बिना और जनता की लोकतान्त्रिक जीवन–पद्धति को प्रभावित किये बिना करनी है । [9]

जयप्रकाश नारायण युवाओं को सम्पूर्ण क्रान्ति की गाड़ी का इन्जन कहते थे । उनके अनुसार युवाओं में आदर्श के लिए उत्सर्ग की भावना होगी है और अपने भविष्य पर खतरा उठाने

की उमंग भी उनमें होती है । इसलिए, वे उन्हें नये मूल्यों के वाहक प्रतीत होते थे । उन्हें लगता था कि युवा सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध पूर्ण निष्ठा से संघर्ष कर सकते है ।

जयप्रकाश नारायण युवाओं के साथ–साथ क्रान्तिकारी विचारको और बुद्धिजीवियो की भूमिका भी सम्पूर्ण क्रान्ति में महत्वपूर्ण मानते थे । उनके अनुसार क्रान्ति के लिए प्रेरणा–शक्ति मुख्यतः दबे कुचले वर्गो से प्राप्त होती है । उनका यह मानना है कि क्रान्तिकारी नेतृत्व का काम होता है कि वह जनता की क्रान्तिकारी आकांक्षाओं को संगठित कर उसे एक दिशा लक्ष्य और आदर्श प्रदान करे । उनके अनुसार जब तक लोकमानस नहीं बदलेगा तब तक क्रान्ति, जन–क्रान्ति, लोकक्रान्ति होगी ही नहीं, यह समझ लेना चाहिए । [10]

जयप्रकाश नारायण ने वर्ग संघर्ष के संदर्भ में अपना विचार देते हुए कहा कि समाज में दो शक्तियाँ है – एक कमजोर वर्ग और एक मजबूत है । उनकी यह धारणा है कि सर्वोदय आन्दोलन में मजबूतों को ही ध्यान में रखा गया और समझाकर उन्हें बदलने का प्रयास किया गया । कमजोर पिछड़े लोगों की इस आन्दोलन में बहुत कम भूमिका रही ।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार वर्ग–संघर्ष की मार्क्सवादी कल्पना हमारे लिए उपयोगी नहीं है । मार्क्स ने जो कुछ कहा था कि औद्योगिक समाज पर लागू होता है । भारत के कृषि प्रधान समाज में वैसा वर्गीकरण ठीक नहीं है वैसा वर्गीकरण होगा भी नहीं शायद । छोटे किसान है, मजदूर है । उनका स्वार्थ उनका जीवन जुड़ा है । उस खेत से जिसकी मालिकी बड़े भूमिवान के पास है । कैसे मार्क्स का वर्ग–संघर्ष हो सकता है । [11]

जयप्रकाश नारायण ने वर्ग संघर्ष को अनिवार्य मानते हुए, नये दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या की । उन्होंने कहा–वर्ग संघर्ष से बचा नहीं जा सकता। वह एक तरह से अनिवार्य है । जो हल चलाता है उसकी जमीन न हो, यह तो बड़ा अन्याय है । लेकिन यह अधिकार हल चलाने वाले को कैसे प्राप्त हो इसका जवाब तो यही हो सकता है कि वह अपने अधिकारों का दावा करे ।

जब तक नीचे के वर्गों में आत्मसम्मान पैदा नहीं होगा, उनके आत्मविश्वास का दबाव नहीं होगा तब तक ऊपर के वर्गो का बदलना संभव नहीं लगता है । इस प्रकार के दूसरे दबाव की कल्पना करता हूँ – ईमानदार और निःस्वार्थ युवकों कार्यकर्ताओं का दबाव और पिछड़े, दबे लोगों के व्यापक वर्ग–संगठन का दबाव । दबाव की यह दुहरी ताकत सामती परस्पराओं और शोषण की व्यवस्था को तोड़ेगी । [12]

जयप्रकाश नारायण का यह मानना है कि क्रान्ति की सफलता का अर्थ होता है पुरानी समाजव्यवस्था का ध्वस्त होना । इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि इतिहास में क्या ऐसी एक भी सामाजिक क्रान्ति हुई, जो अपने अभीष्ट आदर्शो को प्राप्त करने में सफल हुई हो ? जरा क्रेंच–क्रान्ति पर तथा उसके समानता स्वतन्त्रता एवं भ्रातृत्व के आदर्शो पर विचार किजिए । फिर रूसी क्रान्ति और लेनिन के इस उद्घोषणा पर भी विचार कीजिए कि क्रान्ति के बाद सम्पूर्ण सत्ता सोवियतों पंचायतों श्रमिक सोविवों, सैनिक सोवियतों, किसान सोवियतों के हाथ में होगी । रूसी क्रान्ति को हुए 55–56 वर्ष हो गए अब भी रूसी जनता के सर पर पार्टी की तानाशाही मजबूती से कायम है । [13]

जयप्रकाश नारायण ने संघर्ष के लिए पीड़ित और दलितों में जो आत्मसम्मान जगाने की बात की है, उसे दादा धर्माधिकारी ने महत्वपूर्ण मानते हुए कहा कि – कानून या संविधान अधिकार तो दे सकता है, मगर उन अधिकारों के उपयोग की शक्ति कोई संविधान या कानून नहीं दे सकता है । आदिवासी और हरिजन अपने पराक्रम से वह शक्ति प्राप्त करें, तो उन्हें दूसरे के पराक्रम के भरोसे जीना नहीं होगा । वे दूसरों की मेहरबानी और कृपाशीलता पर न जीयें । यह तभी होगा जब उनमें आत्मविश्वास और प्रतिकार की शक्ति पैदा होगी । उनका प्रतिकार शान्तिमय होगा प्रतिकार तीव्र होगा, लेकिन अभिप्राय शुभ होगा । शान्तिमय प्रतिकार की यह विशेषता है । [14]

जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति की घोषणा के पीछे का यह उद्देश्य था कि जो लोग दुख–भोग रहे है, उन्हें दुख से मुक्ति के लिए अपने आप में शक्ति पैदा करनी होगी । उसे 'नहीं' कहने का अभ्यास करना ही होगा । यह गाँधीजी के सत्याग्रह का मूल मंत्र है ।

जयप्रकाश नारायण के क्रान्ति सिद्धान्त के संबंध में राममूर्ति ने कहा कि– 'सम्पूर्ण क्राान्ति में भी हमने यह कहा था कि जनता को अपनी लड़ाई अपने आप लड़नी होगी । सरकार अपना काम तेजी से करें, अपनी विकास नीति बदले, घर–घर में उद्योगों का जाल बिछाये, बेरोजगारी दूर करे तो नीचे के लोगों का मोहताजी दूर हो सकती है । गाँव की खेती, औद्योगिक, अर्थनीति में खेती की पद्धति स्वामित्व का स्वरूप ऋण की व्यवस्था मालिक मजदूर संबंध आदि सब बदलते रहना चाहिए नये मानवीय संबंधों के लिए पूरे तौर नया संदर्भ चाहिए । अगर यह नहीं होगा तो शोषण नहीं मिटेगा और शोषण रहेगा तो हिंसा रहेगी, क्योंकि हिंसा शोषण की कोख से ही जन्म लेती है । एक ओर बढ़ना होगा जुल्म मत करो और दूसरी ओर कहना होगा 'जुल्म सहो मत' । जुल्म सहने वाला, जुल्म करने वाला दोनों के कारण जुल्म कायम रहता है । [15]

जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रान्ति द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि आम आदमी को जगाकर प्रजातान्त्रिक मूल्यों की रक्षा की जा सकती है । 1977 में जनता के नेतृत्व में लोकतान्त्रिक विद्रोह कर इंदिराशाही का तख्ता पलट दिया । जयप्रकाश नारायण के निजी सचिव ने एक आलेख में पत्रकार दिलीप चित्र के विचार को उद्धृत किया – जे०पी० के अलावा और कोई विश्व इतिहास में नहीं हुआ जो सफलता पूर्वक यह दिखा सका हो कि जिन आमजनों को कमजोर समझा जाता है वे स्वतः सत्ता का सृजन कर सकतेहै ओर आपस में बाँट सकते है । जेपी ने यह भी सिद्ध किया कि यद्यपि लोकतन्त्र के सबसे बड़े शत्रु अपने अन्दर ही होते है, परन्तु आमजनों को जगाकर उनके अधिकारो पर होने वाले किसी भी अधिनायकवादी प्रहार को नाकाम किया जा सकता है । उनके इस उदाहरण से प्रेरित होकर किसी भी देश की जनता लोकतन्त्र को समाप्त करने की कोशिश के विरूद्ध उलट व्यवहार करेगी । [16]

इस तरह पूर्णतः शान्तिमय लोकतान्त्रिक तरीके से तानाशाही के विरूद्ध संघर्ष किया जा सकता है । जयप्रकाश नारायण ने यह स्वयं स्वीकारा है कि इस क्रान्ति का उद्देश्य सामाजिक जीवन में परिवर्तन के साथ–साथ व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाना है ।

वस्तुतः जयप्रकाश नारायण के क्रान्ति संबंधी विचार का आधार समाजवादी चिंतन है ।

निष्कर्ष – उपर्युक्त अध्ययनों के बाद हम यह कह सकते है कि जयप्रकाश नारायण ने समाज में परिवर्तन के लिए क्रान्ति को आवश्यक माना है । लेकिन यह क्रान्ति शान्तिमय तरीके से होनी चाहिए । जयप्रकाश नारायण ने समाज को ट्रस्टीशिप के महत्व के बारे में समाज को जागरूक किया । समाज में फैली हुई बुराईयों का विरोध किया ।

अतः हम कह सकते है कि जयप्रकाश नारायण ने समाज के उत्थान के लिए बहुत प्रयास किया ।

संदर्भ–सूची

1. जयप्रकाश नारायण, कारावास की कहानी, बिहार सर्वोदय मंडल, पटना, 1977, पृ० 32
2. जयप्रकाश नारायण, मेरी जेलडायरी आनन्द पेपर बैक्स, दिल्ली, 1977, पृ० 41
3. वही, दिसम्बर कही कहानी ।
4. जयप्रकाश नारायण मेरी पोल की डायरी, आनन्द पेपर बैंक्स, नई दिल्ली 1977, पृ० 133
5. वही
6. जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रान्ति की खोज में विचार यात्रा, सर्व सेवा संघ–प्रकाशन, वाराणसी–भाग–2, प्रथम प्रकाशन, मार्च 1978, पृ० 112
7. वही, पृ० 112–113
8. वही, पृ० 146 ।
9. जयप्रकाश नारायण, कारावास की कहानी, पटना बिहार सर्वोदय मण्डल, 1977, पृ० 37
10. जयप्रकाश नारायण जे०पी० का वर्ग संघर्ष, सं० आचार्य राममूर्ति सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, अक्टूबर 1977, संस्करण प्रथम पृ० 13
11. जयप्रकाश नारायण, वर्ग संघर्ष की मेरी कल्पना जे०पी० का वर्ग संघर्ष, संपादक आचार्य राममूर्ति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, अक्टूबर 1977, संस्करण प्रथम, पृ० 17

12. वही, पृ० 18

13. वही, पृ० 27

14. वही, पृ० 36–37

15. राममूर्ति, पीड़ा की पुकार, जे०पी० का वर्ग संघर्ष, संपादक आचार्य राममूर्ति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, अक्टूबर 1977, संस्करण प्रथम, पृ० 44–45

16. सच्चिदानन्द, दूसरी आजादी के जनक थे जयप्रकाश, पटना, आर्यावर्त 11 अक्टूबर 1977, पृ० 20